

## महन्ती का त्याग

जिसको भगवान् के सेवक होने का पद प्राप्त हो गया है उसको दूसरा कोई भी पद प्राप्त होने से प्रतिष्ठा या गौरव का अनुभव नहीं हो सकता । स्वयं लक्ष्मीपति जिसके अपने हैं वह संसार-लक्ष्मी के झूठे विलासों को महत्व नहीं दे सकता । भक्त-कोकिलजी मीरपुर के दरबार की सेवा के लिये लौट तो आये परन्तु उन्होंने गद्दी पर बैठने की रस्म पूरी नहीं करवायी । दिन-रात भजन, स्मरण, मानसी-सेवा, पद गान, नाम-धुन आदि में लगे रहते । भिन्न-भिन्न गाँवों में दरबार की सेवा के लिये बड़ी-बड़ी बन्धानें बँधी हुई थी । दरबार के इन नये स्वामी ने उनके सब बहीखातों को एक दिन कुएँ में डाल दिया । इन बड़ी-बड़ी रकमों के हिसाब-किताब नष्ट होने से दरबार का मुनीम तो पागल ही हो गया । श्रीस्वामीजी ने इनकी अथवा लागों के कहने-सुनने की कोई परवाह नहीं की । जिस के हृदय में ईश्वर के प्रति सच्चा विश्वास है, वह किसी और के प्रति निर्भर नहीं रह सकता । उस समय श्रीस्वामीजी की एकान्त निष्ठा इतनी प्रबल थी कि दो तीन वर्ष तक तो प्रायः ऊपर से नीचे आते ही नहीं थे ।